International Journal of Applied Research 2020; 6(12): 228-231

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(12): 228-231
www.allresearchjournal.com
Received: 17-10-2020
Accepted: 19-11-2020

डॉ. कल्पना मिश्रा
पी–एच.डी. शिक्षा–अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. कल्पना मिश्रा
पी–एच.डी. शिक्षा–अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

"रीवा विकासखण्ड के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन"

डॉ. कल्पना मिश्रा

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा विकासखण्ड के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह परीक्षण है जो किसी विशेष विषय अथवा पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ और कुशलताओं का मापन करता है। इसका आंकलन एक शैक्षिक वर्ष में परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर, शिक्षकों द्वारा करायी गयी शैक्षिक क्रियाओं के आधार पर या दोनों माध्यमों से किया जाता है। अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्दः रीवा विकासखण्ड, माध्यमिक विद्यालय, छात्र–छात्राएँ एवं शैक्षिक उपलब्धि व तुलनात्मक अध्ययन।

1. प्रस्तावना
शिक्षा मनुष्य को अज्ञात तत्वों से परिचित कराकर उसे अनेक जटिल रहस्यों को समझने के योग्य बनाती है। अर्थात उसे ज्ञानवान, चिंतक, विचारक तथा अभिव्यक्ति की क्षमता से युक्त बनाती है। शिक्षा मनुष्य के उन सभी नैतिक आदर्शों को स्थापित करने का कार्य करती है, जो उसे सही अर्थों में सामाजिक प्राणी के रूप में मान्य करने हेतु आवश्यक है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनुष्य को मानव के रूप में परिवर्तित करने का कार्य शिक्षा ही करती है।
शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। यदि किसी भी व्यक्ति को जीवन में सफलता प्राप्त करनी है, तो शिक्षा उसके लिए अति आवश्यक है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है।
शिक्षा एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्मजात गुणों का विकास करके उनके व्यक्तित्व को निखारती है और व्यक्ति को उसके कर्तव्यों का ज्ञान कराते हुए उनके विचार एवं व्यवहार मे समाज के लिए हितकर परिवर्तन करती है। व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक शिक्षा की आवश्यकता रहती है। प्रत्येक समय उसका प्रभाव किसी न किसी रूप मे अवश्य विद्यमान रहता है। मानव का अस्तित्व बिना शिक्षा के ''बिना पतवार के नाव'' के समान है। इसकी आवश्यकता प्रत्येक प्राणियों की आन्तरिक शक्तियों को समझनें एवं अन्तर्निहित शक्तियों के समुचित विकास करने में प्रमुखतया रहती है जिससे वह कल्पना तर्क अथवा जिज्ञासा द्वारा नवीन योगदान दे सके।
शिक्षा प्रणाली मानव की योग्यताओं के अधिकतम विकास की एक सर्वाधिक सरल, व्यवस्थित एवं प्रभावी प्रक्रिया है, जो उसके ज्ञान, बोध एवं कौशल में वृद्धि करती है। शिक्षा प्रणाली को और अधिक सशक्त बनाने में सूचना प्रौद्योगिकी की नवीनतम तकनीकियों, नवाचारों, उपकरणों तथा जनसंचार माध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है तथा ज्ञान प्राप्ति एवं कौशल विकास के नये द्वार खोल दिये हैं। शैक्षिक उपलब्धि का महत्व प्रत्येक शिक्षण कार्य में अत्यन्त आवश्यक है इससे विद्यार्थी की बौद्धिक स्तर के उन्नयन का पता चलता है।
गैरीसन के अनुसार[1] ''शैक्षिक उपलब्धि बालक की वर्तमान योग्यता अथवा विशिष्ट विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा की प्रगति का मापन करती है।'' महात्मा गाँधी के अनुसार ''शिक्षा से मेरा आशय उस प्रक्रिया से है, जो बालक और मनुष्य के शरीर, आत्मा तथा मन के रूपों का सर्वांगीण विकास का कार्य करे।''

उन्नीसवीं शताब्दी की शुरूआत से ही शिक्षा में निष्पत्ति परीक्षा पर बल दिया जाने लगा है। निष्पत्ति परीक्षाओं का इतिहास काफी प्राचीन है। आज के युग में तो शिक्षा के सभी स्तरों में इस प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग हो रहा है। जैसे–जैसे शिक्षाशास्त्रियों ने यह अनुभव किया कि मौखिक परीक्षाओं का प्रचलन अब सम्भव नहीं है। वैसे–वैसे इस प्रकार के परीक्षणों का विकास एवं प्रयोग होना प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम् 1840 ई0 में शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष श्री होरक मन ने लिखित परीक्षाओं पर जोर दिया। इसी के परिणाम स्वरूप बोस्टन में लिखित परीक्षाओं के प्रयोग का श्री गणेश हुआ। अमेरिका के न्यूयार्क स्टेट रेजेन्ट ने सन् 1865 में लिखित परीक्षाओं पर जोर दिया। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इंग्लैण्ड व अमेरिका में व्यापक रूप से लिखित परीक्षाओं का प्रचलन शुरू हुआ। इसी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सर्वप्रथम फिशर महोदय ने वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का सूत्रपात किया। शैक्षिक उपलब्धि परीक्षणों से तात्पर्य उन परीक्षणों से है, जो छात्रों के ज्ञान, बोध, कौशल आदि का मापन करते हैं। विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों का अधिगम करने में छात्रों ने कहाँ तक सफलता प्राप्त की है? इसका मापन करने के लिए उपलब्धि परीक्षणों का ही प्रयोग किया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि किसी निश्चित समयावधि में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के द्वारा किसी एक या अनेक विषयों में छात्र के ज्ञान व समझ में हुए परिवर्तन का मापन करने वाले उपकरणों को उपलब्धि परीक्षण कहते हैं। शैक्षिक उपलब्धि प्रायः शिक्षा के उद्देश्यों पर आधारित होते हैं तथा इनसे उद्देश्यों की प्राप्ति के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त होती है।

2. शोध की आवश्यकता एवं महत्व

आज के छात्र एवं छात्रायें ही देश के भावी कर्णधार हैं और इसके निर्माण में शिक्षा की भूमिका अत्याधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षा के बिना कोई भी छात्र व छात्रा समाज में अपना स्थान नहीं बना सकती है। कहा भी जाता है कि बालक समाज के दर्पण के रूप में प्रतिबिम्बित होते है, जो अपनी कार्यकुशलता व व्यक्तित्व से समाज को प्रतिबिम्बित करते हैं।

सामान्यतः देखा जाय तो जिन बालकों की बुद्धि–लब्धि उच्च होती है, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होती है। देखना यह है, कि क्या शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों की बुद्धि में कोई अंतर पाया जाता है? यदि है, तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि क्यों और कैसे प्रभावित होती है। अतः वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है, कि बालकों की बुद्धि–लब्धि का पता लगाया जाय व देखा जाय कि कहाँ तक बुद्धि–लब्धि से शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हो रही हैं? जिससे इस दिशा में ठोस प्रयास किया जा सकें, ताकि छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकें। प्रस्तुत शोधकार्य द्वारा शोधार्थिनी यह पता लगाना चाहती है, कि बुद्धि द्वारा शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकें।

3. उद्देश्य

कोई ज्ञान या कोई अन्वेषण उद्देश्य विहीन नहीं होता है। अतः इस शोध के भी कतिपय उद्देश्य हैं। उद्देश्य के महत्व को बताते हुए जॉन डीवी महोदय[1] ने कहा है–''किसी शैक्षिक अनुसंधान परियोजना पर तब तक कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए जब तक उस अध्ययन के परिणाम किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति एवं प्रक्रिया को प्रभावकारी ढंग से श्रेष्ठतम बनाने की संभावना प्रस्तुत नहीं कर देते।''

अतः शोध कार्य के निम्नांकित उद्देश्य हैं–

1. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का अध्ययन।
2. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का अध्ययन।
3. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का अध्ययन।

4. परिकल्पनाएँ

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पना से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना के अभाव में शोध कार्य प्रायः असंभव होता है। परिकल्पना, शोधार्थी को कार्य करने की प्रेरणा देती है। परिकल्पना की पुष्टि हो जाने के पश्चात शोधकार्य के निष्कर्ष निकल आते हैं।

शोध कार्य में परिकल्पना प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है, जिससे समस्या समाधान को उचित दिशा मिलती है। विज्ञान में एक ही परिकल्पना को लेकर उसका परीक्षण करते हैं, किन्तु शैक्षिक अनुसंधान में अनेक परिकल्पनायें लेते हैं और प्रत्येक की सत्यता का परीक्षण करते हैं। अतः परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर है।

गुड एवं हॉट[2] ने परिकल्पना के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है, कि "उपकल्पना के प्रभाव में अनुसंधान एक अनर्दिष्ट विचारहीन विचरण के समान है। परिकल्पना सिद्धांत तथा अनुसंधान के बीच एक आवश्यक कड़ी है जो ज्ञान की वृद्धि की खोज से सहायक होती है।"

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. शोध अध्ययन का परिसीमांकन

1. यह शोध अध्ययन मध्य प्रदेश राज्य के जिला रीवा के रीवा विकासखण्ड के माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य रीवा विकासखण्ड से 10 शहरी व 10 ग्रामीण शासकीय माध्यमिक विद्यालयों को यादृच्छिकीय चयन द्वारा किया गया है।
3. न्यादर्श का चुनाव माध्यमिक स्तर के कक्षा–10 के छात्र एवं छात्राओं को ही चयनित किया गया है।
4. शोध अध्ययन में शहरी छात्र 200 एवं शहरी छात्राएं 200 व ग्रामीण छात्र 200 एवं ग्रामीण छात्राएं 200 इस प्रकार कुल 800 छात्र एवं छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।

6. शोध विधि

प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method)

शोध क्षेत्र रीवा विकासखण्ड के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यार्थियों का नियंत्रित परिस्थितियों में जलोटा के सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण द्वारा प्रशासन किया गया है।

7. चर

प्रस्तुत शोधकार्य में निम्न चरों का प्रयोग किया गया है।

स्वतंत्र चर	– शहरी विद्यार्थी एवं ग्रामीण विद्यार्थी
परतंत्र चर	– बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि
नियंत्रित चर	– कक्षा 10– शासकीय माध्यमिक विद्यालय

8. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अपने न्यादर्श के वांछित आँकड़ों के चयन हेतु प्रश्नावली उपकरण को प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने निम्न उपकरणों का प्रयोग किया है–

1. सामान्य मानसिक योग्यता–डॉ0 एस0 जलोटा
2. शैक्षिक उपलब्धि हेतु वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांक

9. न्यादर्श

विद्यार्थी	माध्यमिक विद्यालय	छात्र	छात्राएं
शहरी	10	200	200
ग्रामीण	10	200	200
कुल	20	400	400

10. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से मंगल, एस.के. एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा (2005)[3], पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस.के. (2013)[4], गुप्ता, एस.पी. (1997)[5], सिंह अरूण कुमार (2001)[6] एवं त्रिपाठी, प्रो. मधुसूदन (2007)[7] ने शोध विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

11. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना– 1 "शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है"

सारणी 1: शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर की सार्थकता की जाँच

क्रम सं0	क्षेत्र	N	M	S.D.	SEd.	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थी (छात्र एवं छात्राएं)	400	68.73	7.05	0.46	0.34	N.S.
02	ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थी (छात्र एवं छात्राएं)	400	68.57	7.01			

N.S. असार्थक

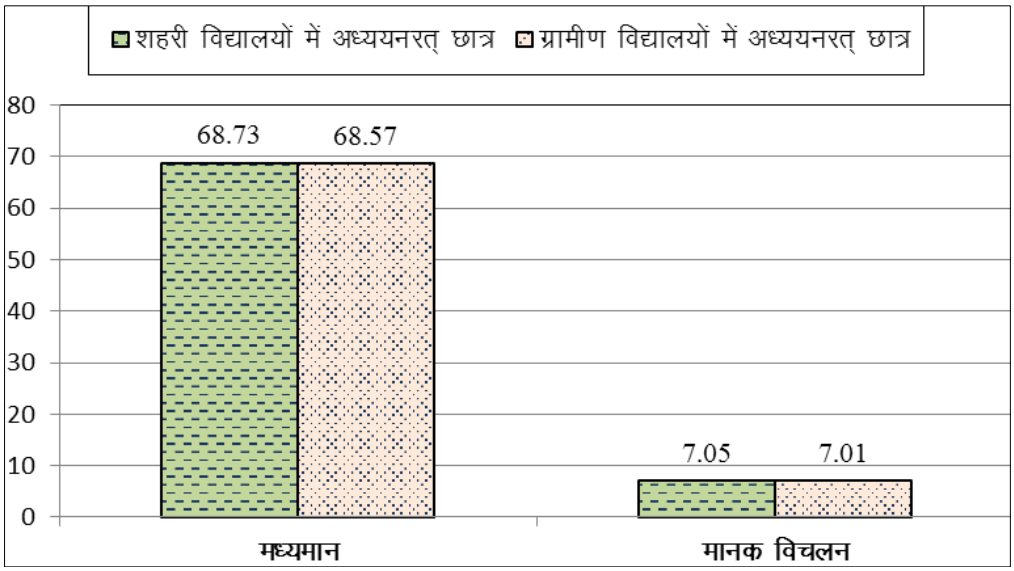

चित्र 1: शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर की सार्थकता की जाँच

विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी एवं आरेख संख्या – 1 से स्पष्ट होता है कि शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का परीक्षण ज्ञात करने पर प्राप्तॉकों का मध्यमान क्रमशः 68.73 एवं 68.57 तथा मानक विचलन क्रमशः 7.05 व 7.01 पाया गया। दोनों के मानों में अन्तर पाया गया, यह अन्तर सार्थक है या नहीं, के लिए क्रान्तिक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान 0.34 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 एवं 2.56 से कम पाया गया। अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना संख्या–1 "शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है –स्वीकृत की जाती है।

शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसके कई कारण हो सकते हैं–

1. शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के शैक्षिक लक्ष्यों में समानता हो सकती है।
2. ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों एवं शहरी क्षेत्र के छात्रों की शैक्षिक सोच, रहन, सहन, शैक्षिक विचारधारा तथा शैक्षिक सोच में समान प्रबलता पायी जाती है।

12. निष्कर्ष

शैक्षिक उपलब्धि का महत्व प्रत्येक शिक्षण कार्य में अत्यन्त आवश्यक है इससे विद्यार्थी की बौद्धिक स्तर के उन्नयन का पता चलता है। प्रत्येक विद्यार्थी की भिन्न–भिन्न विषयों में उपलब्धि भिन्न–भिन्न होती है अर्थात् शैक्षिक उपलब्धि से आशय किसी निश्चित कार्यक्षेत्र में अर्जित किये गये ज्ञान का मापन करने से होता है। अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर

यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

संदर्भ

1. सिंह, अरुण कुमारः शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन पब्लिशर्स, पटना, 2006; पेज–436.
2. राय पारसनाथ, अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, संकरण–2004, पृष्ठ–65
3. मंगल, एस.के. एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा : विद्यार्थी विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, लायल बुक डिपो, 2005.
4. पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस.के. : अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 2013.
5. गुप्ता, एस.पी. सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1997.
6. सिंह अरूण कुमार :'मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ'' चतुर्थ संस्करण, मोतीलाल नगर बनारसीदास दिल्ली, 2001.
7. त्रिपाठी, प्रो. मधुसूदन : शिक्षा दर्शन और मनोविज्ञान का शब्दकोश, खण्ड–5 बाल विकास, ओमेगा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2007